प्रथम अध्याय

''सुशीला टाकभौरे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

सुशीला टाकभौरे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

आधुनिक युग के दलित साहित्यकारों में प्रमुख स्थान प्राप्त करनेवाली सुशीला जी दलित समाज और नारी से संबंधित साहित्य लिख रही हैं। एक दलित स्त्री होने के कारण उनके साहित्य में नारी और दलित समाज की समस्याओं का अंकन अधिक मात्रा में दिखाई देता है। साथ ही नारी मन के अनेक पहलुओं को उन्होंने उजागर किया है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि, वे दलित समाज के परिवर्तन की समर्थक हैं। दलित समाज की दयनीय स्थिति में सुधार लाने के लिए वे यथाशक्ति कार्य कर रही हैं। वे नारी स्वतंत्रता की भी समर्थक हैं तथा समाज में जातिभेद और लिंगभेद की भावना को पूर्णतः मिटाना चाहती हैं। उन्होंने दलित समाज की विड़ंबनाओं को अलग-अलग दृष्टि से देखा और उसे अपने साहित्य में व्यक्त किया है।

मुख्य रूप से सुशीला जी को कहानीकार और कवयित्री के रूप में जाना जाता है। उनकी सभी कहानियाँ दलित समाज और नारी से संबंधित होने के कारण उनमें विषय-साम्य दिखाई देता है। उन्होंने कभी अपने अनुभवों के आधार पर कहानियाँ लिखी, तो कभी परिवेश से उपजे कथानकों को चुना है। इसी कारण उनकी सभी कहानियों में यथार्थ है, कुछ मात्रा में कल्पना भी इनमें मिलती है। इन कहानियों में पाई जानेवाली अनेकानेक विशेषताओं को देखने से पहले सुशीला जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को परखना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि किसी के जीवन, परिवेश आदि के बारे में सही जानकारी हासिल किए बिना उनके साहित्य को हम सही रूप में विश्लेषित नहीं कर पाते हैं। साहित्यकार अपने परिवेश एवं परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है। इसी कारण सुशीला जी के समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व को देखना आवश्यक हो जाता है।

1.1 व्यक्तित्व -

किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने से पहले उनके व्यक्तित्व को जानना आवश्यक है। जिससे मालूम होता है कि उनके साहित्य में उनके व्यक्तित्व का कितना प्रभाव पड़ा है।

1.1.1 जन्म तथा बचपन -

सुशीला जी का जन्म बानापुरा तहसील में सिवनी मालवा, जिला होशंगाबाद, मध्यप्रदेश में हुआ। उनकी जन्म तिथि सन् 1954 के आषाढ़ माह की शुक्ल पक्ष की नवमी है। जन्मपत्रिका बनानेवाले पंडित ने उनका नाम कुछ और ही बताया था। परंतु उनके पिताजी ने उनका नाम 'सुशीला' रखा है। घर में सभी उन्हें प्यार से 'शीला' कहते हैं। छः वर्ष की आयु से उनकी शिक्षा आरंभ हुई। स्कूल में जाने के लिए उनके मन में बहुत ही उत्सुकता, जिज्ञासा और आग्रह था। स्कूल में नाम लिखवाने के लिए और स्कूल में जाने के लिए सुशीला जी बहुत बेचैन हो जाती थी। उठते-बैठते माँ से यही कहती थी - "मेरा नाम स्कूल में कब लिखवाएंगे ? आज ही क्यों नहीं लिखवाते नाम ? मैं स्कूल कब जाऊँगी ?"[1] स्कूल जाने से पहले पिताजी ने उन्हें हिंदी वर्णमाला, बारहखड़ी और गिनती का ज्ञान दिया। वे उन्हें बहुत प्यार के साथ पढ़ाते थे।

सुशीला जी वाल्मीकि समाज की है। उस समय गाँव में दलित पिछड़ी जातियों के घर सवर्ण समाज की बस्तियों से दूर, गाँव के बाहर होते थे। सुशीला जी का घर भी गाँव से अलग था। गाँव से अलग, समाज के मोहल्ले से अलग सुशीला जी का मन पढ़ाई में रमता था। उनके घर में बिजली की व्यवस्था नहीं थी। शाम होते ही घर में मिट्टी के तेल की चिमनियाँ लगाई जाती थी। इन्हीं के धुंधले प्रकाश में वह अपनी पढ़ाई करती थी। कक्षा में और खेलकूद के मैदान में उनकी अनेक सहेलियाँ थी। तीसरी से आठवीं कक्षा तक वह खेल-कूद के लिए विशेष रूप से चुनी जाती थी। सुशीला जी बचपन से ही अध्ययनशील रही है।

1.1.2 माता-पिता -

सुशीला जी की माता का नाम श्रीमती पन्नाबाई और पिताजी का नाम श्री रामप्रसाद घांवरी है। उनके पिताजी तीसरी कक्षा तक पढ़े थे। हिंदी का अक्षर-ज्ञान और भाषा ज्ञान उन्हें था। वे थोड़ा हिसाब या जोड़-घटाना भी कर लेते थे। माताजी अशिक्षित थी। अपने सभी बच्चों को स्कूल भेजने के पहले पिताजी ने ही उनको अक्षर ज्ञान कराया था। उनकी माँ के भाई-बहन बचपन में ही

गुजर गए थे। एक बहन थी, जिसका नाम तुलसा था। उनका विवाह भोपाळ में हुआ था। मगर विवाह के एक साल बाद गर्भावस्था में चेचक की बीमारी के कारण विषमज्वर से उनकी मृत्यु हुई।

पिताजी का पैतृक गाँव हरदा से आगे नेमावर (निमाड़) है। नर्मदा नदी के चौड़े पाट के एक ओर हंड़िया गाँव है और दूसरी ओर है नेमावर गाँव। इस गाँव में प्रतिवर्ष नर्मदा नदी की बाढ़ का प्रकोप गाँववालों पर होता है। कभी-कभी पूरा गाँव ही बाढ़ की चपेट में आ जाता है। प्रतिवर्ष आर्थिक नुकसान और घर-गृहस्थी संबंधी जीवन की अस्त-व्यस्तता को देखते हुए पिताजी माँ को लेकर ससुराल के गाँव बानापुरा में आ गए। वहीं उन्हें रेल्वे में नौकरी मिल गई।

1.1.3 नानी -

सुशीला जी की नानी अपनी बेटी और दामाद के साथ रहती थी। वह बहुत बुद्धिमान थी। नानी के साथ रहने का प्रभाव बच्चों पर पड़ा है। नानी सब बच्चों को लाड़-प्यार से रखती थी। वह बच्चों की प्रत्येक जिद को पूरा करती थी। जीवन के अंतिम दिनों में नानी अपनी बहन के यहाँ रहती थी। वह लंबी-लंबी कहानियाँ सुनाती थी, जिन्हें सुशीला जी बचपन में बहुत ध्यान से सुनती थी। नानी की प्रत्येक कहानी का प्रभाव सुशीला जी पर पड़ा है।

1.1.4 भाई-बहन -

सुशीला जी के दो बड़े भाई और दो बहने हैं और दो छोटे भाई हैं। इस तरह वे चार भाई और तीन बहनें हैं। बहनों में सबसे छोटी होने के कारण सुशीला जी अपने माता-पिता और नानी की लाड़ली रही हैं। सबसे बड़ा भाई बी. कॉम. प्रथम वर्ष की पढ़ाई के बाद भिलाई में बाबू की नौकरी करने चला गया। दूसरा बड़ा भाई मैट्रिक के बाद होशंगाबाद की पेपर मिल में नौकरी कर रहा है। सबसे बड़ी बहन दूसरी कक्षा तक और दूसरी बहन चौथी कक्षा तक पढ़ी हैं।

1.1.5 शिक्षा-दीक्षा -

सुशीला जी की प्राथमिक शिक्षा 'गंज प्राथमिक शाला, बानापुरा' स्कूल में हुई। पाँचवी कक्षा उत्तीर्ण होने के बाद 'मिडिल स्कूल' में पढ़ने लगी। आठवीं की बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण होने

के बाद वह 'शासकीय नेहरू स्मारक उच्चतर माध्यमिक शाला' में आई। उस समय वहाँ दसवीं और ग्यारहवीं दो ही कक्षा थी। ग्यारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण होकर वे कॉलेज में पढ़ने लगी। सन् 1973-74 में बी. ए. की उपाधि प्राप्त की। उस समय वे अपने समाज की पहली लड़की थी, जिसने मैट्रिक और बी. ए. किया था। सन् 1976 में नागपुर विश्वविद्यालय से बी. एड्. की परीक्षा उत्तीर्ण हुई। सन् 1986 में नागपुर विश्वविद्यालय से ही एम्. ए. में प्रथम श्रेणी हासिल की। एम्. ए. भाग दो में लघु-शोध प्रबंध 'नदी के द्वीप का सैद्धांतिक, चारित्रिक मूल्यों तथा सामाजिक प्रभाव का विश्लेषण' नागपुर विश्वविद्यालय को प्रस्तुत किया।

पीएच्. डी. की उपाधि हेतु - 'अज्ञेय के कथा-साहित्य में नारी' विषय पर शोध-कार्य किया। सन् 1991 में नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा पीएच्. डी. की उपाधि उन्हें प्रदान की गई। अब वे डी. लिट् की उपाधि के लिए शोधरत हैं, विषय है - 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महिला लेखन : सामाजिक न्याय एवं नारी अस्मिता' (काव्य एवं कथा-साहित्य के संदर्भ में)।

1.1.6 परिवार -

सुशीला जी का विवाह सन् 1974 में एक समाजसेवी, शिक्षाविद् एवं समाज चिंतक श्री. सुंदरलाल टाकभौरे जी से हुआ। सुशीला जी की तीन बेटियाँ हैं - देवयानी, शिवरानी और मोहिनी। एक बेटा है - शरदकुमार।

1.1.7 अर्थोपार्जन -

सुशीला जी एक सफल अध्यापिका हैं। सन् 1978 से सन् 1985 तक 'नमकगंज माध्यमिक शाला' में अध्यापन कार्य किया। सन् 1986 में अब तक 'सेठ केसरीलाल पोरवाल कॉलेज, कामठी' में अध्यापन कार्य कर रही हैं। इसके साथ ही वे एक समाजसेविका के रूप में भी कार्य कर रही हैं।

1.1.8 बाह्य व्यक्तित्व -

सुशीला जी बहुत ही साधारण महिला हैं। वे सादगी के साथ रहनेवाली, सरल

स्वभाव की विनम्र महिला हैं। मध्यम कद-काठी, गेहुआ रंग, माथे पर बिंदी, सँवरे बाल, ठीक से सँवरी साड़ी, प्रसन्न चेहरा ये उनकी बाह्य व्यक्तित्व की विशेषताएँ कही जा सकती हैं।

1.1.9 आंतरिक व्यक्तित्व -

सुशीला जी का आंतरिक व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली है। करूणा, त्याग, दया, ममता, क्षमा और उत्सर्ग की भावना उनके आंतरिक व्यक्तित्व के आभूषण हैं। वे देखने में प्रसन्नचित्त दिखाई देती हैं। उनके आंतरिक व्यक्तित्व में निम्न लिखित विशेषताएँ दिखाई देती हैं -

1.1.9.1 मिलनसार -

सुशीला जी में अहं की भावना नहीं दिखाई देती है। वे बहुत ही मिलनसार हैं। कूपमंडूकता से वे दूर हैं। कोई भी स्त्री-पुरूष, बूढ़े, सबसे बहुत ही सहजता, विनम्रता और सरलता के साथ मिलती हैं। उनके मन में सबके लिए प्रेम, अपनामपन और सहृदयता है।

1.1.9.2 अतिथ्यशील -

सुशीला जी अतिथ्य सत्कार के धर्म को कुशलता के साथ निभाती हैं। कोई भी परिचित-अपरिचित व्यक्ति सुशीला जी के घर पहुँचे तो वह उनके स्नेह, अपनत्व और जलपान के साथ साहित्य और समाजसंबंधी चर्चाओं और विचार-विमर्श को सहज ही प्राप्त कर सकता है। उनके अतिथ्यशील व्यक्तित्व के कारण आनेवाला हर व्यक्ति उनके पास से प्रसन्न होकर ही बाहर निकलता है।

1.1.9.3 संवेदनशील -

सुशीला जी का हृदय बहुत ही संवेदनशील है। किसी के दुख या तकलीफ को देखकर वे बहुत ही द्रवित हो जाती हैं। सादगीपूर्ण, सरल दिखनेवाली सुशीला जी के मुख पर एक अलग ओज की आभा दिखाई देती है। सामान्य स्थिति की उनकी विनम्र वाणी गंभीर स्थिति में तर्कपूर्ण, स्पष्ट और तीखा रूप भी ले लेती है।

1.1.9.4 ***भावुक*** -

भावुकता सुशीला जी का परंपरा से प्राप्त गुण है। अपनी भावुकता के माध्यम से ही वे सबकी वेदना-संवेदना से पूर्णरूपेण जुड़ पाती हैं। उनकी भावुकता की गहराई और ऊँचाइयों को उनके काव्य में देखा जा सकता है। उनकी कहानियों के कथानक में जो विशेषताएँ हैं, वह उनकी भावुकता ही है।

1.1.9.5 ***कल्पनाशील*** -

सुशीला जी बचपन से ही कल्पनाशील हैं। कल्पना की अधिकता इतनी थी कि वे अंधेरे से डरती थी। अंधेरा देखते ही उनका कल्पनाशील मन अनेक डरावनी कल्पनाएँ कर लेता। भूत-प्रेत जैसी भयानक कल्पना के साथ शेर और डाकू की कल्पना भी उन्हें भयभीत कर देती।

1.1.9.6 ***गंभीर*** -

सुशीला जी के स्वभाव का एक पक्ष गंभीरता भी है। गंभीरता के साथ चिंतन-मनन उनका स्वभाव है। स्पष्ट रूप से उन्हें अंतर्मुखी स्वभाव की कहा जा सकता है। वैसे वे कम बोलती हैं, लेकिन जहाँ बोलने की जरूरत हो वहाँ वे बहुत बोलती हैं।

1.1.9.7 ***हँसमुख*** -

सुशीला जी स्वभाव से हँसमुख हैं। उनके हँसमुख व्यक्तित्व से कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। पारिवारिक जिम्मेदारियों को कुशलता से निभाते हुए वे अपने रचना साहित्य को भी विशेष न्याय देती हैं।

1.1.9.8 ***मानवतावादी*** -

सुशीला जी पूर्णतः मानवतावादी हैं। स्वयं पर या किसी पर अन्याय होता देखकर उन्हें क्रोध भी आता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक ओर सुशीला जी का बाह्य व्यक्तित्व शांत, सौम्य, स्निग्धता लिए हुए है तो दूसरी ओर उनका आंतरिक व्यक्तित्व बहुमुखी ही प्रभावशाली है।

1.1.10 रुचियाँ -

सुशीला जी की रुचियाँ बहुत ही परिष्कृत और ऊँचे स्तर की हैं। उनका स्वभाव मूल रूप से उन्हें एक विशिष्ट ऊँचे स्तर पर बनाए रखता है। हलकी बातें, चुगली और छिछले हँसी मजाक को वे बिल्कुल पसंद नहीं करती हैं। भावनाएँ सौंदर्यपूर्ण होनी चाहिए, कोई भी बात निम्न स्तर की नहीं है, इन बातों को वे बहुत महत्त्व देती हैं। बचपन से उनकी रुचि अध्ययन के प्रति अधिक रही है। उत्तम साहित्य को पढ़ने के लिए वे अधीर रहती हैं।

सुशीला जी संगीत प्रेमी हैं। संगीत सुनकर उनका मन भावनाओं की गहराइयों में उतर जाता है। वे उत्तम संगीत की प्रशंसक हैं और रसिक भी। बचपन में उन्हें पैंटिंग का भी शौक था। सुविधाएँ न मिल पाने के कारण वे संगीत और चित्रकला सीख नहीं पाई। बचपन से ही लेखन के प्रति उनकी रुचि रही है। साहित्य के प्रति उनकी रुचि का यह सत्य प्रमाण है कि, आठवीं कक्षा में (1962) उन्होंने अपनी पहली कहानी 'धर्मपाल' नाम से लिखी है। उन्हें बचपन से कविता लिखने का शौक है। काव्य और कहानियों के साथ सुशीला जी गंभीर लेखन भी करती रही हैं।

1.1.11 साहित्यिक प्रेरणा -

सुशीला जी ने आठवीं कक्षा से साहित्य लिखना शुरू किया। आस-पास घटित होनेवाली घटनाएँ, संपर्क में आनेवाले लोग आदि ने उन्हें प्रेरित किया है। बचपन में माता-पिता और गुरुजनों की प्रेरणा उन्हें मिली है। लेकिन सबसे अधिक प्रेरणा ससुराल में मिली। ससुराल के सभ्य, सुसंस्कृत, शालीनता से परिपूर्ण वातावरण ने सुशीला जी को हिंदी साहित्य की काव्य-माधुरी का रसास्वादन करने की प्रेरणा दी।

बी. ए. के कालखंड में सन् 1971 से 1974 में उन्होंने अनेक कविताएँ लिखी। इसके प्रेरणास्त्रोत उनके हिंदी साहित्य के अध्यापक श्रीमान डोंगरे जी थे। नागपुर आने के बाद साहित्यिक

व्यक्तियों से भेंट-मुलाकात, विचारों के आदान-प्रदान ने उनकी साहित्यिक रुचि को प्रोत्साहित किया। कवि-सम्मेलनों में अनेक कवियों की कविताओं को सुनकर भी काव्य-लेखन की प्रेरणा मिली।

1.1.12 यात्राएँ -

साहित्य और समाज से जुड़ी सुशीला जी ने विचारों के प्रचार-प्रसार और विचारों के आदान-प्रदान की दृष्टि से पूरे देश की यात्रा की है। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, पूर्व बंगाल आदि प्रदेशों में अनेक बार वे यात्राएँ कर चुकी हैं। उनकी यात्राओं का उद्देश्य नारी उत्थान और सामाजिक समानता का प्रयत्न रहा है। उन्होंने अनेक साहित्यिक गोष्ठियों में साहित्य संबंधी चर्चाएँ और आलेख-पठन किया है।

1.1.13 पुरस्कार और सम्मान -

सुशीला जी के लेखन और सामाजिक कार्यों से उनकी अपनी एक पहचान बनी है। उनको सामाजिक और साहित्यिक संस्थाओं ने सम्मानित किया है। विशेष रूप से -

1. मध्य प्रदेश दलित साहित्य अकादमी उज्जैन की ओर से 'यह तुम भी जानो' काव्यसंग्रह को दिनांक 8 सितंबर, 1996 में दस हजार रुपयों के नगद पुरस्कार से सम्मानित किया है।

2. मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री. दिग्विजय सिंह के हाथों 'मध्य प्रदेश दलित साहित्य अकादमी विशिष्ट सेवा सम्मान' से सन् 1997 को सम्मानित किया है।

3. उत्तर प्रदेश दलित साहित्य अकादमी (फर्रुखाबाद) द्वारा 'पद्मश्री गुलाबबाई सम्मान' से सम्मानित किया गया है।

4. मेगनम फाउंडेशन नागपुर, द्वारा सन् 1998 में 'ज्ञान ज्योति' पारितोषिक सम्मान प्राप्त हुआ है।

5. हिमाचल प्रदेश की साहित्य संस्था 'समन्वय हिमाचल' की ओर से 'रानी रत्नकुमारी' पुरस्कार एवं 'सारस्वत सम्मान' सन् 1998 में प्राप्त हुआ है।

1.2 कृतित्व -

सुशीला जी के जीवन-परिचय, उनके व्यक्तित्व के पहलू आदि बातों को हम देख चुके हैं। इनसे प्रेरणा पाकर सुशीला जी ने जो साहित्य-रचना की, उसका परिचय संक्षेप में प्राप्त करना आवश्यक है। तभी हम इसका सही मूल्यांकन कर सकेंगे कि उनके व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर क्या असर पड़ा है। सुशीला जी ने अपने साहित्य का आरंभ आठवीं कक्षा से ही किया। बचपन में वे कुछ कहानियाँ, कुछ कविताएँ लिखती थी, मगर उन्हें संभालकर नहीं रखती थी। उनकी पहली कहानी 'धर्मपाल' सन् 1962 में लिखी जिसे बाद में सुधारित रूप देकर 'व्रत और व्रती' शीर्षक के साथ 'टूटता वहम' कहानी संग्रह में संग्रहीत किया है।

सुशीला जी 9 वीं - 10 वीं कक्षा में ही छोटी-छोटी सुंदर कविताएँ लिखती थी। किसी भी कापी के किसी भी पन्ने में कविताएँ लिख लेना और फिर भूल जाना इस कारण वे अपनी सभी कविताओं को इकठ्ठा नहीं कर पाई। विद्यार्थी जीवन में लिखी कविताएँ जो सुरक्षित मिल गई, उन्हें 'स्वाति बूंद और खारे मोती' इस प्रथम काव्य संग्रह में संकलित किया है। इसके अलावा दलित समाज और नारी की स्थिति पर उन्होंने अनेक शोधपूर्ण लेख लिखे हैं, जिनमें से कुछ लेख 'परिवर्तन जरूरी हैं' लेख-संग्रह के रूप में प्रकाशित हुए हैं।

सन् 1993 के बाद उनके लेखन में विशेष परिवर्तन आया है। इसके पश्चात साहित्य में उनकी दृष्टि तीखी, तर्कपूर्ण और समीक्षात्मक है। विशेषकर दलित साहित्य के क्षेत्र में उनकी एक पहचान बनी है। सुशीला जी के रचना-संसार को हम निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं -

1.2.1 कहानी संग्रह -

दलित कहानीकार के रूप में साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्ध हो रही सुशीला जी ने दो कहानी संग्रह लिखे हैं -

1. 'टूटता वहम' (1997)
2. 'अनुभूति के घेरे' (1997)

1.2.2 काव्य संग्रह -

सुशीला जी कवयित्री रूप में भी प्रसिद्ध हैं। उनके तीन काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं -

1. 'स्वाति बूंद और खारे मोती' (1993)
2. 'यह तुम भी जानो' (1994)
3. 'तुमने उसे कब पहचाना' (1995)

1.2.3 लेख संग्रह -

सुशीला जी ने दलित समाज और नारी की स्थिति पर अनेक शोध-पूर्ण लेख लिखे हैं, जिनमें से कुछ लेख- 'परिवर्तन जरूरी है' शीर्षक से 1997 में प्रकाशित हुए हैं।

1.2.4 विवरणात्मक पुस्तकें -

सुशीला जी ने दो विवरणात्मक पुस्तकें लिखी हैं, जो साहित्य और समाज में नारी की स्थिति पर प्रकाश डालती हैं -

1. 'हिंदी साहित्य के इतिहास में नारी' (1994)
2. 'भारतीय नारी : समाज और साहित्य के संदर्भ में' (1996)

1.2.5 पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएँ -

सुशीला जी वर्तमान साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में लगातार लिख रही हैं - दैनिक लोकमत समाचार, दैनिक नवभारत - 'युद्धरत आम आदमी' (त्रैमासिक पत्रिका, हजारीबाग, बिहार), 'सुमन लिपि' (मुंबई, नागमय संस्कृति), 'पूर्वदेवा' (उज्जैन मध्य प्रदेश), 'लोकसूचक' (कानपुर), 'प्रज्ञा साहित्य' (फर्रुखाबाद), 'अंगुतर' (नागपुर), 'जाग बिरादर' (नागपुर), 'वाल्मीकि परिवर्तन' (मुंबई), 'हंस' (दिल्ली), 'सरोपमा' (पंजाब), 'माझी जनता' (नागपुर), 'अभिमूकनायक' (दिल्ली) आदि।

1.2.6 पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित समीक्षाएँ -

नवभारत, लोकमत समाचार (नागपुर), नवभारत टाईम्स, राष्ट्रीय सहारा (दिल्ली), नई दुनिया, दैनिक भाष्कर (भोपाल), ग्रीनसत्ता (दिल्ली), सुमन लिपि, युद्धरत आम आदमी आदि।

1.2.7 संपादन कार्य -

सुशीला जी लेखन के साथ-साथ संपादन कार्य से भी जुड़ी हैं। दलित वाल्मीकि समाज में चेतना एवं जागृति के उद्देश्य से उन्होंने संपादन कार्य किया है।

1. दलित वाल्मीकि एवं सफाई कर्मी समाज में जागरण के लिए प्रकाशित पत्रिका 'जाग बिरादर' का प्रबंध संपादन।
2. फुले-आंबेडकरी विचार की प्रतिनिधि पत्रिका 'अंगुत्तर' में संपादकीय सहयोग।
3. यशोधरा महिला मंड़ल, द्वारा प्रकाशित 'आम्ही मैतरणी' (मराठी) पत्रिका की उपाध्यक्षा आदि।

1.2.8 साहित्यिक संस्थाओं से संबंध -

1. फुले-आंबेडकरी लेखक संघ, नागपुर।
2. ऑल इंड़िया प्रोग्रेसिव वुमेन्स, आर्गनाइजेशन, नागपुर।
3. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा।
4. लोहिया अध्ययन केंद्र, नागपुर।
5. सेंटर फॉर अल्टरनेट, दलित मिड़िया, दिल्ली।
6. महिला मुक्ति आंदोलन की सक्रिय संस्था- नेशनल अलाइन्स ऑफ वुमेन।

इस प्रकार हम देखते हैं कि, सुशीला जी ने सिर्फ किसी एक विधा को ही साहित्य के लिए नहीं चुना। बल्कि साहित्य की विविध विधाओं को अपनाया है, जैसे - कविता, कहानी, निबंध, एकांकी, नाटक, संस्मरण आदि में उनका लेखन कार्य जारी है।

निष्कर्ष -

सुशीला जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को देखते हुए कहा जा सकता है कि, देखने में सामान्य दिखाई देनेवाली इस महिला के दिल और दिमाग में कितने ही विचारों और भावनाओं के तूफान समाए हुए हैं। उन्होंने अपने जीवन में शिक्षा को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। अपने वाल्मीकि

समाज में सबसे ज्यादा शिक्षा प्राप्त करने का सम्मान हासिल किया। अपनी तीखी नजर से समाज में जहाँ भी कुछ विशेष देखती हैं, उसे वे अपने साहित्य का विषय बनाकर समाज तक पहुँचाती हैं।

कल्पनाशीलता, गंभीरता, अतिथ्यशीलता और मिलनसार आदि उनके व्यक्तित्व की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। अपने माता-पिता, बहन, नानी आदि से प्रेरणा प्राप्त की तथा पति और ससुरालवालों ने भी उन्हें बहुत सहयोग दिया और बच्चों ने भी। सुशीला जी स्वयं एक अध्यापिका हैं। वे अपने अध्यापन और लेखन के माध्यम से समाज को सही दिशा देने का प्रयत्न कर रही हैं।

सुशीला जी ने बचपन से ही साहित्य लिखना शुरू किया। उन्होंने अपने अनुभवों से साहित्य-लेखन के लिए विषय चुने हैं। आज तक उन्होंने कहानी, काव्य, नाटक, एकांकी आदि विधाओं में लेखन किया है। निकट भविष्य में अनेक ग्रंथों के प्रकाशित होने की योजना है। उनकी कुछ कविताओं का अनुवाद मराठी, तेलगु, पंजाबी भाषा में हुआ है। कुछ कविताओं का बांगला अनुवाद बांगला की त्रैमासिक पत्रिका 'चतुर्थ दुनिया' में छपा है। कुछ कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद कर अनुवादित, संपादित अंग्रेजी काव्य-संग्रह में लिखा गया है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि, जीवन की अनेक, घटनाओं, परिवेश और परिस्थितियों का प्रभाव काफी हद तक सुशीला जी के साहित्य पर पड़ा है। अत: उनके साहित्य में उनके जीवन और व्यक्तित्व का रूप झलकता है। इस तरह सुशीला जी हमेशा अपने पाठक समाज के साथ हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम', पृ. 15